The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, October 2022
www.theresearchdialogue.com

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन"

श्री उमेश सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन)

आयुष गुप्ता
एम0एड0 (शोध छात्र)
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन)

सारांश :

वर्तमान परिदृश्य से सामना करने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को अपनी रूचि, क्षमताओं, योग्यताओं व दृष्टिकोण से उपयुक्त व्यवसाय का चयन करना होता है, इसके लिये सर्वप्रथम योजना की आवश्यकता होती है। व्यवसाय चयन से पूर्व अपनी रूचियों के बारे में जानना व व्यवसाय सम्बन्धित महत्वपूर्ण काम है। व्यवसाय चयन का सबसे महत्वपूर्ण चरण किशोरावस्था है, व्यवसाय चयन में छात्रों की रूचि व योग्यता के अतिरिक्त माता–पिता का प्रभाव, शैक्षिक प्राप्ति, लिंग, रोजगार के अवसर और अन्य कारक शामिल है। ये कारक कभी–कभी व्यवसाय के चुनाव में अवरोधक का कार्य करते हैं जो कि छात्रों को द्वन्द की स्थिति में ले जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में जालौन जिले के माध्यमिक स्तर के 88 छात्र एवं छात्राओं का चयन प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

कुंजी शब्द : *माध्यमिक स्तर, व्यावसायिक द्वन्द।*

प्रस्तावना :

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है, इसके द्वारा मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों तथा जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाता है। यह कार्य मनुष्य के जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है तब उसे सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखायी जाती हैं जब वह तीन–चार वर्ष का हो जाता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाया जाने लगता है। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा सुनियोजित ढ़ंग से चलती है, विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी जीवन भर चलता रहता है। इस सम्बन्ध में **पेस्टालॉजी** का कथन है ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।''

शिक्षा और व्यवसाय में बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह दोनों एक ही नदी के दो पात के समान है। यदि हम दोनों के उद्देश्यों और प्रयोजनों पर गौर करें तो यह बात समझी जा सकती है कि शिक्षा के कई उद्देश्य हैं, उनमें से प्रमुख उद्देश्य हैं व्यक्ति में निहित सामर्थ्य की सीमा में उसका सर्वांगीण विकास करना। शिक्षा सतत् संचरणीय प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के सामने आने वाली व्यवसायिक समस्याओं का निदान भी सम्भव है। शिक्षा के प्रकाश में व्यक्ति अपनी योग्यता, क्षमता, बौद्धिकता एवं विश्व में व्याप्त गुण तथा दोष को सहजता से समझ जाता है। शिक्षा किसी भी व्यवसाय के उन्नयन का अपरिहार्य सोपान है। अर्जन की व्याख्या को हृदयस्थ करते हुये धनार्जन की मात्रा एवं प्रकार को कितना महत्व देने की सीमा निर्धारित करते हुये अपने अनुकूल व्यवसाय को चुनना अथवा व्यवसाय के अनुकूल अपने को ढ़ालना ही व्यवसायिक सफलता एवं सन्तोष का मूलाधार है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की सिफारिशों के पश्चात् 10वीं कक्षा के बाद स्कूली पाठ्यक्रम को शैक्षणिका और व्यावसायिक धाराओं में विविधता प्रदान की गयी। व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति बड़ी संख्या में छात्रों को प्रभावित करती है। किशोरावस्था वही अवधि है जब छात्र के जीवन में

बड़ा मोड़ आता है क्योंकि उसका भविष्य इस स्तर पर चयनित विषय पर निर्भर करेगा। इस स्तर पर व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति उत्पन्न करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक प्रभाव, शिक्षा प्राप्ति, कार्य–संस्कृति, पारिवारिक प्रभाव और लिंग–भेद।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

वर्तमान समय में व्यवसाय, शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अतः व्यवसाय से सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी होना व उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है। शोध–कार्य के माध्यम से इनके बारे में सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

कुछ विद्यार्थी व्यवसाय चयन को लेकर दुविधा की स्थिति में रहते हैं जिसके कारण वे सही व्यवसाय का चुनाव नहीं कर पाते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से प्राप्त परिणाम द्वारा छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द की समस्या उत्पन्न होने के कारणों को जानकर उनके समाधान के विकल्प प्रस्तुत कर सकते हैं। इस शोध के द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन करके उन्हें व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन व परामर्श उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे वे उचित व्यवसाय की ओर अग्रसर हो सके। इसके साथ ही शिक्षकों को छात्र एवं छात्राओं की स्थिति के प्रति जागरूक किया जा सकता है जिससे शिक्षक छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति के अनुसार ही निर्देशन व परामर्श योजना का निर्माण कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति क्यों व किन कारणो से उत्पन्न हुई है। उन कारणों को दूर करने के लिये व उनका सामना करने के लिये उन्हें पहले से ही तैयार किया जा सकता है तथा प्रस्तुत शोध के माध्यम से सम्बन्धित क्षेत्र में नवीन जानकारियों व तथ्यों की खोज को बढ़ावा मिलेगा। प्रस्तुत शोध व्यावसायिक द्वन्द की समस्या को दूर करने हेतु नये–नये विकल्प व विधियां निर्मित करती हैं जिसका उपयोग व जानकारी ना सिर्फ छात्र–छात्राओं बल्कि अध्यापकों के लिये भी आवश्यक है।

अवसरों के अभाव में कई बार यह देखने को मिलता है कि छात्र–छात्रायें उन विषयों का चयन कर लेते हैं जिनमें उनकी रूचि व योग्यता नहीं होती है जिससे वे उस विषय का ज्ञान तो प्राप्त कर लेते हैं परन्तु सम्बन्धित विषय क्षेत्र में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति

में जब व्यवसाय चयन की बात आती है तो वह दुविधा की स्थिति में आ जाते हैं जिसका प्रमुख कारण जानकारी का अभाव तथा उचित जानकारी का और उचित मार्गदर्शन ना मिलना है।

प्रस्तुत शोध के माध्यम से छात्र–छात्राओं में दुविधाओं को दूर करने का प्रयास करके उन्हें उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता के अनुसार व्यवसाय का चुनाव करने हेतु सुझाव प्रदान किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनत् छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाये :

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

नाखट, प्रीति (2019) ने अपने अध्ययन में **''व्यावसायिक द्वन्द तथा तनाव, मूल्य व शिक्षा''** नामक शोध में निष्कर्ष स्वरूप पाया है कि व्यावसायिक द्वन्द तथा तनाव, मूल्य व शिक्षा एक दूसरे को प्रभावित नहीं करती है और उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में व्यावसायिक द्वन्द मुख्यता सामाजिक कारणों से उत्पन्न होता है।

दानी, प्रियंका व हेत्वी देसाई (2018) ने अपने अध्ययन **''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यावसायिक चयन''** नामक शोध कार्य में निष्कर्ष स्वरूप मुख्य रूप से शिक्षक, परिवार व समाज का प्रभाव नहीं पड़ता है अपितु कई कारक मिलकर व्यवसाय चयन को प्रभावित कर सकते हैं।

तूर, गुनित (2014) ने अपने अध्ययन **''स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोर छात्र एवं छात्राओं के कैरियर चुनाव की क्षमता''** नामक शोध कार्य में निष्कर्ष स्वरूप में सार्थक अन्तर पाया गया है। वित्तपोषित विद्यालयों की तुलना में स्ववित्तापोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में कैरियर चुनाव की उच्च क्षमता पायी गयी है।

नेगी, सुष्मिता व इशिता दास राय (2012) ने अपने अध्ययन **''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक चयन में तुलनात्मक अध्ययन''** में निष्कर्ष स्वरूप पाया कि परिवार, माता–पिता, सहपाठी, अखवार, टीवी व इण्टरनेट द्वारा प्राप्त जानकारियों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रयुक्त अनुसंधान विधि :

प्रस्तुत शोध कार्य में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उपकरण :

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने **नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा** द्वारा प्रकाशित एवं **डॉ0 (श्री) अनीत कुमार** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवारा पंजाब और **श्रीमती रेखा** रिसर्च स्कॉलर, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब द्वारा निर्मित **''कैरियर कॉनफिलक्ट स्केल''** का उपकरण के रूप में प्रयोग किया।

अध्ययन का न्यादर्श एवं न्यादर्श विधि :

शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में सम्मिलित जालौन जनपद के 60 माध्यमिक विद्यालयों में से कुल 4 माध्यमिक विद्यालयों का चयन लाटरी विधि के माध्यम से किया गया। इन माध्यमिक विद्यालयो में उपस्थित माध्यमिक स्तर के समस्त विद्यार्थियों में न्यादर्श के रूप में केवल 88 विद्यार्थियों का चयन **स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि** से किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :

शोध समस्या की प्रकृति एवं विषय वस्तु को देखते हुये शोधार्थी द्वारा निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है।

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–टेस्ट तथा क्रान्तिक अनुपात ;ब्ण्त्ण्द्ध
4. मानक त्रुटि
5. स्वतंत्राश अंश
6. सार्थकता स्तर

प्रथम शून्य परिकल्पना का परीक्षण–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक– 001

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	क्रान्तिक अनुपात ;ब्त्प्द्ध	सार्थकता
छात्र	44	217.36	21.67	4.97	86	1.5	.05 स्तर पर स्वीकृत
छात्राएं	44	224.84	24.94				

तालिका 001 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 217.36 एवं मानक विचलन 21.67 प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार छात्राओं का मध्यमान 224.84 तथा मानक विचलन 24.94 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 4.97 है तथा क्रान्तिक अनुपात 1.5 प्राप्त हुआ है जो 86 स्वतंत्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 1.99 से कम है। **अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत है।**

द्वितीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक– 002

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	ज.मान	सार्थकता
ग्रामीण छात्र	22	224.2	19.97	6.77	42	1.35	0.05 स्तर पर स्वीकृत
शहरी छात्र	22	215	24.72				

तालिका 002 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्रों का मध्यमान 224.2 एवं मानक विचलन 19.97 है तथा शहरी छात्रों का मध्यमान 215 एवं मानक विचलन 24.72 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.77 है तथा टी–मान 1.

35 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतंत्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से कम है। **अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।**

तृतीय शून्य परिकल्पना का परीक्षण–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक– 003

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	ज.मान	सार्थकता
ग्रामीण छात्रायें	22	217.90	18.59	6.63	42	2.09	0.05 स्तर पर अस्वीकृत
शहरी छात्रायें	22	231.77	28.32				

तालिका 003 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण छात्राओं का मध्यमान 217.90 एवं मानक विचलन 18.59 प्राप्त हुआ है तथा शहरी छात्राओं का मध्यमान 231.77 एवं मानक विचलन 28.32 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.63 है तथा टी–मान 2.09 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतंत्रांश के 0.05 स्तर पर 2.02 से अधिक है। **अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है।**

चतुर्थ शून्य परिकल्पना का परीक्षण–

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक– 004

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	ज.मान	सार्थकता
स्ववित्तपोषित विद्यालय के छात्र	22	213.27	21.21	6.32	42	2.73	0.05 स्तर पर अस्वीकृत
वित्तपोषित विद्यालय के छात्र	22	222.36	20.27				

तालिका 004 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 213.27 एवं मानक विचलन 21.21 प्राप्त हुआ है तथा वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों का मध्यमान 222.36 एवं मानक विचलन 20.71 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की मानक त्रुटि 6.32 है तथा टी–मान 2.73 प्राप्त हुआ है जो 42वें स्वतंत्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से अधिक है। **अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।**

पंचम शून्य परिकल्पना का परीक्षण–

माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका क्रमांक– 005

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	स्वतंत्राश	ज.मान	सार्थकता
स्ववित्तपोषित विद्यालय की छात्रायें	22	225	31.93	8.04	42	0.84	0.05

वित्तपोषित विद्यालय की छात्रायें	22	218.18	20.13				स्तर पर स्वीकृत

तालिका 005 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान 225 एवं मानक विचलन 31.93 है। इसी प्रकार वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं का मध्यमान 218.18 तथा मानक विचलन 20.13 है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 8.04 है तथा टी–मान 0.84 प्राप्त हुआ है जो 42वें स्वतंत्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से कम है। **अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।**

निष्कर्ष :

परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक द्वन्द में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। जबकि ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन पाया गया है।

स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित विद्यालयों के छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द में अन्तर पाया गया है जबकि स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित विद्यालयों की छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

अतः वर्तमान में छात्र एवं छात्रायें दोनों में व्यवसाय को लेकर द्वन्द में अन्तर नहीं है। दोनों ही व्यवसाय हेतु उन्नत है। बेरोजगारी की समस्याओं को देखते हुये छात्र एवं छात्राओं दोनों को ही व्यवसाय हेतु परिवार व माता–पिता का सहयोग प्राप्त हो रहा है। साथ ही विद्यालय व मीडिया तथा सरकार व विभिन्न संगठनों द्वारा एक समान रोजगार, व्यवसाय शिक्षण में प्रवेश आदि में समानता उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र–छात्राओं को समान अवसर व मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. माथुर, एस0एस0 (2017); शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. सिंह, अरूण कुमार (2017); मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास
3. शर्मा, आर0ए0 (2011); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर0लाल बुक डिपो।
4. गुप्ता, एस0पी0 (2011); अनुसंधान संदर्शिका, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
5. सिंह, रामपाल एवं डॉ0 ओ0पी0 शर्मा (2014); शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
6. पाण्डेय, के0पी0 (2008); शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
7. त्रिपाठी, लाल वचन (2002); मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियां, आगरा, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस।

Websites :

- http://www.shodganga.inflibnet.ac.in
- http://www.researchgate.net
- http://www.google.com

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-3, *October* 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Oct-2022/06

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

श्री उमेश सिंह एवं आयुष गुप्ता

For publication of research paper title

"माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में व्यावसायिक द्वन्द का तुलनात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-03, Month October, Year-2022.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com